हम्द है सब तेरी ज़ाते किबरिया के वास्ते है दुरूदो नात खतमुल अम्बिया के वास्त
और सब असहाबे आले मुज़तबा के वास्ते
दर बदर फिरती है खल्कत इल्तजा के वास्ते आसरा तेरा है पर मुझ बेनवा के वास्ते
रहम कर मुझ पर इलाही औलिया के वास्ते
इन बुजुर्गों को शफी लाया हूं मै होकर मलूल की जियो ये अर्ज मेरी उनकी बर्कत से कबूल
हाथ उठाउं जब तेरे आगे दुआ के वास्ते
गुनहगार हूं मैं बेशक पर चाहता हूं आसरा तेरा कर अपने फज़ल से फैज़ मुझे या रब
ख्वाजा हाफिज़ फज़लुद्दीन पेषवा के वास्ते
कर चुका हूं नाम–ए– आमाल गो अपना स्याह बख्श या अल्लाह अपने फज़ल से मेरे गुनाह
ख्वाजा अल्ला बख्श पेषवा के वास्ते
है खुला तौबा का दरवाजा खलासी के लिए खोल दे अबवाबे रहमत अपने आसी के लिए
हादिए रहमत अली शाह रहनुमा के वास्ते
या इलाही मैं हूं बदकार व गुनहगार व अशीम रहम कर मुझ पर तुफैले इसमें रहमानों रहीम
सयदी अब्दुर्रहीम पेषवा के वास्ते
अपने उल्फत से इलाही कर मुझे भी मुस्तफीद और बुजुर्गों के रहूं इर्शाद से दायम रशीद
इस रशीदे अहमद रशीदे ब सखा के वास्ते
कसरते असियां से गरचे पुश्त है मेरी दुता खैंच ले पर अपनी जानिब अपनी रहमत से खुःदा
हाजिये इम्दादउल्लाह रहनुमा के वास्ते
पाक कर जुल्माते अशियां से इलाही दिल मेरा कर मुनव्वर नूरे इरफां से इलाही दिल मेरा
हज़रते नूरे मुहम्मद स0 परजेया के वास्ते

ऐसे मरने पे करूं कुरबान या रब लाख ईद अपनी तैगे इश्क से करले अगर मुझको शहीद
हाजिए अब्दुल रहीम अहले गिन्ज़ा के वास्ते

कर दा पैदा दर्दे गम मेरे दिले अफ़गार में बार पाउं जिससे ऐ बारी तेरे दरबार में
शैख अब्दुल बारी शाहे बेरिया के वास्ते

शिर्क़ व असियां व खज़ालत से बचाकर ऐ करीम कर हदायत मुझको अब राहे सेरातल मुस्तिक़ीम
शाहे अब्दुल हादी पीरे हुदा के वास्ते

दीनों दुनियां की तलब इज्ज़ात न सरदारी मुझे अपने कुचे की अता कर ज़िल्लतो ख्वारी मुझे
शाहे जिद्दीने अज़ीज दो सराये के वास्ते

दे मुझे इश्के मुहम्मद स0 और मुहम्मदयों स0 मे गिन हो मुहम्मद स0 ही मुहम्मद स0 विरद मेरा रात दिन
शैये मुहम्मद स0 और मुहम्मदी अतकिया के वास्ते

हुब्बे हक़ हुब्बे इलाही हुब्बे मौला हुब्बे रब अलगर्ज़ कर दे मुझे मेहबे मोहब्बत सबका सब
शबासे मोहेब्बुल्लाह शैख़ असफ़ा के वास्ते

गरचे मैं ग़रके शकावत हूं सादते लईद पर तवक्को है करे मुझसे शकी को तू सईद
बू सईदे अहले सखा के वास्ते

काल अबतर हाल अबतर सब तेरे अबतर है काम लुत्फ़ से अपने मेरे कर मुल्के दीन का इंतजाम
शाहे निज़ामुद्दीन बल्खी मुकतदा के वास्ते

है यही सब दीन मेरा और यही सब मुल्को माल यानी मुल्के इश्क मे कर मुझको बा जाहो ज़लाल
शाहे ज़लालुद्दीन ज़लीले असफ़ा के वास्ते

खुबसे दुनियां दिल से करके पाक मुझको ऐ हबीब अपने बागे कुदस की कर सैर तू मेरे नसीब
अब्दे कुद्दूस षहे कुद्दूस व सफ़ा के वास्ते

कर मोअत्तर रूह को बुए मोहम्मद स0 से मेरी और मुनव्वर चश्म कर रूए मोहम्मद स0 से मेरी
ऐ ज़ेयाशेख मोहम्मद स0 रहनुमा के वास्ते

कर अता राहे शरीयत खुए अहमद से मुझे और दिखा राहे तरीकत रुए अहमद से मुझे
शेख अहमद आरिफे साहिब अता के वास्ते

खोल दे राहे तरीकत कल्ब पर या रब मेरे कर तज़ल्ली हक़ीकत कल्ब या रब मेरे

अहमद अब्दुल हक़ शै मुल्के बक़ा के वास्ते

दीन व दुनिया का नहीं दरकार मुझको जाहो जलाल एक जर्रा दर्द का या हक़ मेरे दिल मे तु डाल

शाहे जलालुद्दीन किस्बरिया औलिया के वास्ते

है मुकद्दद जल्मात असियां से मेरा शम्सुद्दीन कर मुनव्वर नूर इरफां से मेरा शम्सुद्दीन

शेख शम्सुद्दीन तर्क शम्शुज़्ज़ुहा के वास्ते

ऐ मेरे अल्लाह रख हर वक्त हर लैलो नहार इश्क में अपने मुझे बेसबर बेताबो करार

शेख अलाउद्दीन साबर मा रज़ा के वास्ते

दे मलाहत मुझको हक़ नम्कीनी ईमान से और हलावत बख्श गंज शकर इरफां से

शेख करीदुद्दीन शकर गंज बक़ा के वास्ते

इश्क की राह में हुए जो औलिया अक्सर शहीद खंजरे तसलीम से या रब मुझे भी कर शहीद

ख्वाजा कुतबुद्दीन मक्बूले दिला के वास्ते

बे तेरे है नफ़्सो शैतान दर पे ईमानों दीन जल्द आकर हो मेरा या रब मददगारो मोईन

शाहे मोइनुद्दीन हबीबे किबरिया के वास्ते

या इलाही बख्श ऐसा बेखुदी का मुझको ज़ाम जो उठाले पर्दा शर्मो हया व नंगों नाम

ख्वाजा उस्मान बा शर्म बा हया के वास्ते

दूर कर मुझसे गमें मौत और हयाते मिस्तेआर ज़िन्दा कर ज़िकरे शरीफ़ हक़ से दिल ऐ कर्दग़ार

शाह शरीफे जिन्दनी बा इत्तका के वास्ते

आतिशे शौक इस कदर दिल मे मेरे भर ऐ बदूद हर्बुन मूंह से मेरे निकले तेरी उल्फत का दरूद

ख्वाजा मौदुद चिशती पारसा के वास्ते

रहम कर मुझ पर तू ऐ चाहे ज़लालत से निकाल बख्श इसको मारफत का मुझको या रब मुल्को माल

शाहे बू यूसुफ शै शाहो गदा के वास्ते

मस्त और बेखुद बना बूए मुहम्मद स0 से मुझे मोहत्तरम कर ख्वारी कुए मोहम्द स0 से मुझे

सदक़ा अहमद का यह है उम्मीद तेरी ज़ात से के बदल कर दे मेरे आसियां को जिस्नाफ से

अहमद अब्दाल चिशती बा सखा के वास्ते

हद से गुजरा रंजे फर्कत अब तु ऐ परवर दिगार कर मेरी शाम खिजां को वसल से रोजे बहार

शेख अबू इशहाक शामीखुश अदा के वास्ते

शादी व गम से मुझे आलम के तू आज़ाद कर अपने दर्द व गम से या रब दिल को मेरे शादकर

ख्वाजा शमशाद अलवी बू अल अला के वास्ते

है मेरे तू पास हरदम लेकिन मैं अंधा होने पर बख्श वो नूर बसीरत जिससे तू आवे नज़र

बू हबीरा शाहे बशरी पेशवा के वास्ते

ऐश व इशरत से दो आलम के नहीं मतलब मुझे चश्म गरियां सीना बरियां कर अता या रब मुझे

शेख़ हजीफ़ा मरअशी शाहो शफ़ा के वास्ते

न तलब शाही की न ख्वाहिश गदायी की मुझे बख्श अपने दर्द तलब ताक़त रिसायी की मुझे

शेख इब्राहीम अद्यम बादशाह के वास्ते

राहे जिन मेरे हैं दो मज़ाक व गरज़ोगिरा पहुंच तू फ़रियाद को मेरी कहीं ऐ मुस्तआ

शाहे फज़ी इब्न आयाज़ अहले अता के वास्ते

कर मेरे दिल से तू वाहिद दोई का हर्फ दूर दिल में और आंखों में भरदे सर बसर वहदत का नूर

शेख अब्दुल वाहिद इब्न जैद शाह के वास्ते

दूर कर दिल से हज़ाबे जहल और ग़फलत मेरे रब खोल दे दिल में दर इल्म हकी़कत मेरे रब

हादी आलम अली मुश्किल के वास्ते

कुछ नहीं मतलब दो आलम गुलो गुलजार से कर शर्फ मुझको तुम दिदारे पुर अनवार से

सरवरे आलम मोहम्मद मुस्तफ़ा स0 के वास्ते

आ पड़ा दर पर तेरे मैं हर तरफ से हो मलुल कर तू इन नामों की बरक़त से दुआ मेरी कबूल
या ईलाही अपनी ज़ात किबरिया के वास्ते

इन बुजुर्गों के तयीं या रब गर्ज हर कार में कर शफ़ाअत का वसीला अपने तू दरबार में
मुझ ज़लीलो ख्वार औ मस्कीनों गदा के वास्ते

इस दुई ने कर दिया है दूर वहदत से मुझे कर दूई को दूर कर पुरनूर वहदत से मुझे
ताहूं सब मेरे अमल खालिश रज़ा के वास्ते

कर दिया इस अक़्ल ने बेअक़्ल दिवाना मुझे कर ज़रा इस होश से बेहोश मस्ताना मुझे
या हक़ अपने आश्काने बे वफ़ा के वास्ते

कश्मकश से न उम्मीदी के हुआ हूं मै तबा देख मत मेरे अमल कर लुत्फ पर अपनी निगाह
या रब अपने लुत्फो अहसानों अता के वास्ते

चरखे अशियां सर पे है तेरे कदम बहीरें आलम चार सू है फौजे गम कर जल्द अब बहरोकरम
कुछ रिहाई का सबब इस मुबतला के वास्ते

गरचे मैं बदकार नालायक हूं ये शाहे जहां पर बता अब तेरे दर को छोड़ कर जाउ कहां
कौन है तेरे सिवा मुझ बेनवा के वास्ते

है इबादत का सहारा आबिदो के वास्ते और तकिया ज़ोहद का है जाहिदो के वास्ते
है असाए अः मुझ बेदस्तोपाकवा के वास्ते

ना फकीरी चाहता हूं ना अमीरी की तलब ना इबादत ना जोहद ना ख्वाहिशे इल्मो अदब
दर्दे दिल पर चाहिए मुझको खुःदा के वास्ते

अक्ल व होश व फिकर और नुमाए दुनियां बेशुमार की अता तूने मुझ पर अब तू ऐ परवर दिगार
बख्श वो नियमत जो काम आवे सदा के वास्ते

गरचे आलम में इलाही सयी बसयार की पर ना कुछ तोहफा मिला लायक तेरे दरबार की
जानो दिल लाया दे तुझ पर फिदा के वास्ते

गरचे यह हदिया न मेरा काबिले मंजूर है पर जो हो मकबूल क्या रहमत से तेरी दूर है
कुषतगाने तैग व तसलीम व रज़ा के वास्ते

हद से अबतर हो गया है हाल मुझ नाशाद का कर मेरी इमदाद अल्लाह वक्त है इमदाद का
अपने लुत्फ और रहमते बेइन्तहा के वास्ते

जिसने ये षिजरा दिया और जिसने यह षिजरा लिया जिसने ये पढ़ाया या जिसने यह षिजरा पढ़ा
बख्श दे इन सबको या रब महमूद मुस्तफ़ा स0 के वास्ते

आमीन! आमीन! आमीन!